पाठ – 12

औपनिवेशिक शहर नगरीकरण, नगर योजना, स्थापत्य

लघु उत्तर

Q1. औपनिवेशिक शहरों में रिकॉडर्स संभाल कर क्यों रखे जाते थे?

उत्तर : औपनिवेशिक शहरों में रिकॉर्ड्स संभाल कर रखने के निम्नलिखित कारण थे

1. इन रिकॉर्डों से शहरों में व्यापारिक गतिविधियाँ, औद्योगिक प्रगति, सफाई, सड़क परिवहन, यातायात और प्रशासनिक कार्याकलापों की आवश्यकताओं को जानने-समझने और उन पर आवश्यकतानुसार कार्य करने में सहायता मिलती थी।

2. शहरों की बढ़ती-घटती आबादी के प्रतिशत को जानने के लिए भी यह रिकॉर्ड रखा जाता था।

3. शहरों की चारित्रिक विशेषताओं के अन्वेषण के समय उन रिकॉर्डों का प्रयोग सामाजिक और अन्य परिवर्तनों को जानने के लिए किया जाता था।

Q2. औपनिवेशिक संदर्भ में शहरीकरण के पुनर्निर्माण में जनगणना के आंकड़े किस हद तक उपयोगी हैं?

उत्तर : जनगणना के आंकड़े निम्नलिखित तरीकों से शहरीकरण के पुनर्निर्माण में उपयोगी हैं - → वाणिज्यिक मामलों को विनियमित करने के लिए उनकी व्यापारिक गतिविधियों के विस्तृत रिकॉर्ड रखने में मदद मिली। → बढ़ते शहरों में जीवन का ट्रैक रखने के लिए। → 1800 के बाद, भारत में शहरीकरण सुस्त था। → भारत में कुल जनसंख्या में शहरी आबादी का अनुपात बेहद कम था और यह स्थिर बनी हुई थी। → 1900 और 1940 के बीच चालीस वर्षों में शहरी आबादी कुल आबादी के लगभग 10 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 13 प्रतिशत हो गई।

Q3. शब्द "व्हाइट" और "ब्लैक" टाउन क्या संकेत देते हैं?

उत्तर : अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने कारखाने बनाए और यूरोपीय कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण, सुरक्षा के लिए इन बस्तियों को मजबूत किया। मद्रास में, फोर्ट सेंट जॉर्ज, कलकत्ता फोर्ट विलियम में और बॉम्बे में फोर्ट ने ब्रिटिश निपटान के क्षेत्रों को चिह्नित किया। भारतीय व्यापारी, कारीगर और अन्य श्रमिक जिनका यूरोपीय व्यापारियों के साथ आर्थिक व्यवहार था, इन किलों के बाहर स्वयं की बस्तियों में रहते थे। इस प्रकार, शुरुआत से ही यूरोपीय और भारतीयों के लिए अलग-अलग क्वार्टर थे, जिन्हें समकालीन लेखन में क्रमशः 'व्हाइट टाउन' और 'ब्लैक टाउन' के नाम से जाना जाता था।

Q4. कैसे प्रमुख भारतीय व्यापारियों ने खुद को औपनिवेशिक शहर में स्थापित किया?

उत्तर : औपनिवेशिक शहरों ने नए शासकों की व्यापारिक संस्कृति को दर्शाया। राजनीतिक सत्ता और संरक्षण भारतीय शासकों से हटकर ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारियों के पास चला गया। भारतीयों, जिन्होंने बिचौलियों, व्यापारियों और माल के आपूर्तिकर्ताओं के रूप में काम किया, इन नए शहरों में भी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। अपने अंग्रेजी आकाओं को प्रभावित करने के लिए उन्होंने त्योहारों के दौरान भव्य पार्टियों का आयोजन किया। उन्होंने समाज में अपनी स्थिति स्थापित करने के लिए मंदिरों का निर्माण भी किया।

Q5. औपनिवेशिक मद्रास में शहरी और ग्रामीण तत्व किस हद तक घुल-मिल गए थे?

उत्तर : अंग्रज व्यापारियों ने वस्त्र उत्पादों की खोज में 1639 ई० में पूर्वीतट पर मद्रास पट्टनम में एक व्यापारिक बस्ती की स्थापना की। सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने मद्रास की किलेबंदी करवाई और यह किला फोर्ट सेंट जॉर्ज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 1761 ई० में फ्रांसीसियों की पराजय के परिणामस्वरूप मद्रास और अधिक सुरक्षित हो गया तथा शीघ्र ही एक महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक शहर बन गया। यूरोपीय किलेबंद क्षेत्र के अंदर रहते थे, जिसे 'व्हाइट टाउन' कहा जाता था। फोर्ट सेंट जॉर्ज 'व्हाइट टाउन' का केंद्रक था। भारतीय ब्लैक टाउन, जिसे किलेबंद क्षेत्र के बाहर स्थापित किया गया था, में रहते थे। उल्लेखनीय है कि मद्रास का विकास अनेक ग्रामों को मिलाकर किया गया था। अतः इसमें शहरी और ग्रामीण तत्वों का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता था। मद्रास में भिन्न-भिन्न समुदायों के लिए रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध थे।

अतः विविध प्रकार के आर्थिक कार्य करने वाले अनेक समुदाय यहाँ आए और यहीं बस गए। दुबाश, तेलुगू कोमाटी और वेल्लालार इसी प्रकार के समुदाय थे। दुबाश स्थानीय भाषा और अंग्रेज़ी दोनों को बोलने में कुशल थे। अतः वे भारतीयों एवं गोरों के बीच मध्यस्थ का काम करते थे। वेल्लालार नवीन अवसरों का लाभ उठाने वाली एक स्थानीय ग्रामीण जाति थी और तेलुगू कोमाटी अनाज व्यापार में लगा एक प्रभावशाली व्यावसायिक समुदाय था। 18वीं शताब्दी से गुजराती बैंकर भी यहाँ बस गए थे। पेरियार एवं वन्नियार गरीब श्रमिक वर्ग के अंतर्गत आते थे। समीप ही स्थित ट्रिप्लीकेन मुस्लिम जनसंख्या का केंद्र था। अर्काट के नवाब भी यहाँ रहते थे। माइलापुर तथा ट्रिप्लीकेन जाने-माने हिंदू धार्मिक केंद्र थे। अनेक ब्राह्मण अपनी आजीविका यहीं से प्राप्त करते थे। सानथोम तथा वहाँ का बड़ा गिरजाघर रोमन कैथोलिक लोगों का केंद्र था।

ये सभी बस्तियाँ मद्रास शहर का भाग बन गई थीं। इस प्रकार, अनेक ग्रामों को मिला लिए जाने के कारण मद्रास दूर-दूर तक फैली शहर बन गया। भारत में ब्रिटिश सत्ता मजबूत हो जाने पर यूरोपीय किलेबंद क्षेत्र से बाहर, माउंट रोड और पूनामाली रोड पर अपने-अपने रहने के लिए गार्डन हाउसेस अर्थात् बगीचों वाले मकानों का निर्माण करवाने लगे। अंग्रेजों की जीवन-शैली का अनुकरण करते हुए सम्पन्न भारतीय इसी प्रकार के निवास स्थान बनवाने लगे। इस प्रकार, मद्रास के आस-पास स्थित ग्रामों के स्थान पर नए उपशहरी क्षेत्र विकसित होने लगे। गरीब लोग अपने काम के स्थान के निकट स्थित ग्रामों में रहने लगे। इस प्रकार, मद्रास के क्रमिक शहरीकरण के परिणामस्वरूप इन ग्रामों के मध्य स्थित शहर के अंतर्गत आ गए। इस प्रकार मद्रास का स्वरूप एक अर्ध ग्रामीण शहर जैसा हो गया।

दीर्घ उत्तर

Q6. अठारहवीं शताब्दी के दौरान शहरी केंद्रों को कैसे बदला गया?

उत्तर : शहरी केंद्रों ने मुगल साम्राज्य के पतन के साथ बदलना शुरू कर दिया। → मुगल सत्ता का क्रमिक क्षरण उनके शासन से जुड़े कस्बों के पतन का कारण बना। मुगल राजधानियों, दिल्ली और आगरा ने अपना राजनीतिक अधिकार खो दिया। नई क्षेत्रीय शक्तियों का विकास क्षेत्रीय राजधानियों - लखनऊ, हैदराबाद, सेरिंगपट्टम, पूना, नागपुर, बड़ौदा और तंजौर के बढ़ते महत्व को दर्शाता है। व्यापारी, प्रशासक, कारीगर और अन्य लोग इन पुराने मुगल केंद्रों से काम और संरक्षण की तलाश में इन नई राजधानियों में चले गए। → शहरी केंद्रों के इतिहास में व्यापार के नेटवर्क में परिवर्तन परिलक्षित हुआ। → यूरोपीय वाणिज्यिक कंपनियों ने मुगल काल के दौरान अलग-अलग स्थानों पर आधार स्थापित किया था: 1510 में पणजी में पुर्तगाली, 1605 में मसुलिपत्तनम में डच, 1639 में मद्रास में ब्रिटिश और 1673 में पांडिचेरी में फ्रेंच। वाणिज्यिक गतिविधि के विस्तार के साथ, कस्बे इन व्यापारिक केंद्रों के आसपास बढ़ते गए। → अठारहवीं शताब्दी के अंत तक एशिया में भूमि आधारित साम्राज्यों को शक्तिशाली समुद्र आधारित यूरोपीय साम्राज्यों द्वारा बदल दिया गया था। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, व्यापारिकता और पूंजीवाद के बल अब समाज की प्रकृति को परिभाषित करने के लिए आए थे। → अठारहवीं शताब्दी के मध्य से, परिवर्तन का एक नया चरण था। सूरत, मूसलीपट्टनम और ढाका जैसे वाणिज्यिक केंद्र, जो सत्रहवीं शताब्दी में विकसित हुए थे, जब व्यापार अन्य स्थानों पर स्थानांतरित हो गया, तो गिरावट आई। → नए भवन और संस्थान विकसित हुए, और शहरी स्थानों को नए तरीके से बनाने का आदेश दिया गया।

Q7. औपनिवेशिक शहर में उभरे सार्वजनिक स्थानों के नए प्रकार क्या थे? उन्होंने क्या कार्य किए?

उत्तर : औपनिवेशिक शहर में उभरे नए प्रकार के सार्वजनिक स्थान सार्वजनिक पार्क, सिनेमाघर थे, और बीसवीं शताब्दी के सिनेमा हॉल से मनोरंजन और सामाजिक संपर्क के रोमांचक नए रूप मिले। भारतीय आबादी के लिए, नए शहर शानदार स्थान थे जहां जीवन हमेशा एक प्रवाह में लगता था। नई परिवहन सुविधाओं जैसे कि घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ियां और बाद में, ट्रेनों और बसों का मतलब था कि लोग शहर के केंद्र से कुछ दूरी पर रह सकते हैं। इन नए बनाए गए सार्वजनिक स्थानों ने विशेष रूप से महिलाओं को नए अवसर प्रदान किए। शहर में घरेलू और कारखाने के श्रमिकों, शिक्षकों और थिएटर और फिल्म अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के रूप में कई नए व्यवसायों का उदय हुआ।

Q8. उन्नीसवीं सदी में नगर-नियोजन को प्रभावित करने वाली चिंताएँ क्या थीं?

उत्तर : उन्नीसवीं सदी में नगर-नियोजन को प्रभावित करने वाले प्रमुख सरोकार स्वास्थ्य और रक्षा थे। शासकों के हमले से खुद को बचाने के लिए बड़े किलों का निर्माण किया गया था। ऐसा इसलिए भी किया गया ताकि दुश्मन की सेना के खिलाफ किले से एक सीधी रेखा में आग लगने की कोई बाधा न हो। ब्रिटिश शहर के भारतीय हिस्से की भीड़, अत्यधिक वनस्पति, गंदे टैंक, बदबू और खराब जल निकासी की स्थिति के बारे में चिंतित हो गए। इन स्थितियों ने अंग्रेजों को चिंतित कर दिया क्योंकि वे उस समय मानते थे कि दलदली भूमि और जहरीले पानी के जहरीली गैसें अधिकांश बीमारियों का कारण थीं। उष्णकटिबंधीय जलवायु को ही अस्वस्थ और ऊर्जावान देखा गया। शहर में खुले स्थानों को बनाना शहर को स्वस्थ बनाने का एक तरीका था। इस उद्देश्य के लिए कई समितियों का गठन किया गया था। कई बाज़ारों, दफन मैदानों, घाटों और टेनरियों को साफ या हटा दिया गया था। तब से सार्वजनिक स्वास्थ्य की धारणा एक विचार बन गई जिसे शहर की मंजूरी और नगर-नियोजन की परियोजनाओं में घोषित किया गया था।

Q9. नए शहरों में सामाजिक संबंध किस हद तक बदल गए?

उत्तर : नए शहर भारतीयों के लिए दुस्साहसी थे, जहाँ जीवन हमेशा प्रवाह में लगता था। नई परिवहन सुविधाएं जैसे कि घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ियां और बाद में ट्रेन और बसों का मतलब था कि लोग शहर के केंद्र से कुछ ही दूरी पर रह सकते हैं। समय के साथ निवास स्थान से काम की जगह का क्रमिक पृथक्करण हुआ। सार्वजनिक पार्क, थिएटर और बीसवीं सदी से सिनेमा हॉल जैसे सार्वजनिक स्थानों का निर्माण - मनोरंजन और सामाजिक संपर्क के रोमांचक नए रूप प्रदान करता है। शहरों के भीतर नए सामाजिक समूह बने और लोगों की पुरानी पहचान अब महत्वपूर्ण नहीं थी। सभी वर्ग के लोग बड़े शहरों की ओर पलायन कर रहे थे। क्लर्कों, शिक्षकों, वकीलों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और एकाउंटेंट की बढ़ती मांग थी। सामाजिक परिवर्तन सहजता से नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, शहरों ने महिलाओं के लिए नए अवसरों की पेशकश की। मध्यवर्गीय महिलाओं ने पत्रिकाओं, आत्मकथाओं और पुस्तकों के माध्यम से खुद को व्यक्त करने की मांग की।

मानचित्र कार्य

Q10. भारत के रूपरेखा मानचित्र पर, प्रमुख नदियों और पहाड़ी श्रृंखलाओं का पता लगाएं। अध्याय में उल्लिखित दस शहरों, जिनमें बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास शामिल हैं, और इस बात का एक संक्षिप्त नोट तैयार करें कि उन्नीसवीं शताब्दी में आपके द्वारा चिह्नित किए गए किन्हीं दो शहरों (एक औपनिवेशिक और एक पूर्व-औपनिवेशिक) का महत्व क्यों बदल गया।

उत्तर : प्रमुख नदियाँ सिंधु, झेलम, चेनाब, रावी, गंगा, यमुना आदि थीं। प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं अरावली, विंध्य, सतपुड़ा आदि थीं। भारतीय

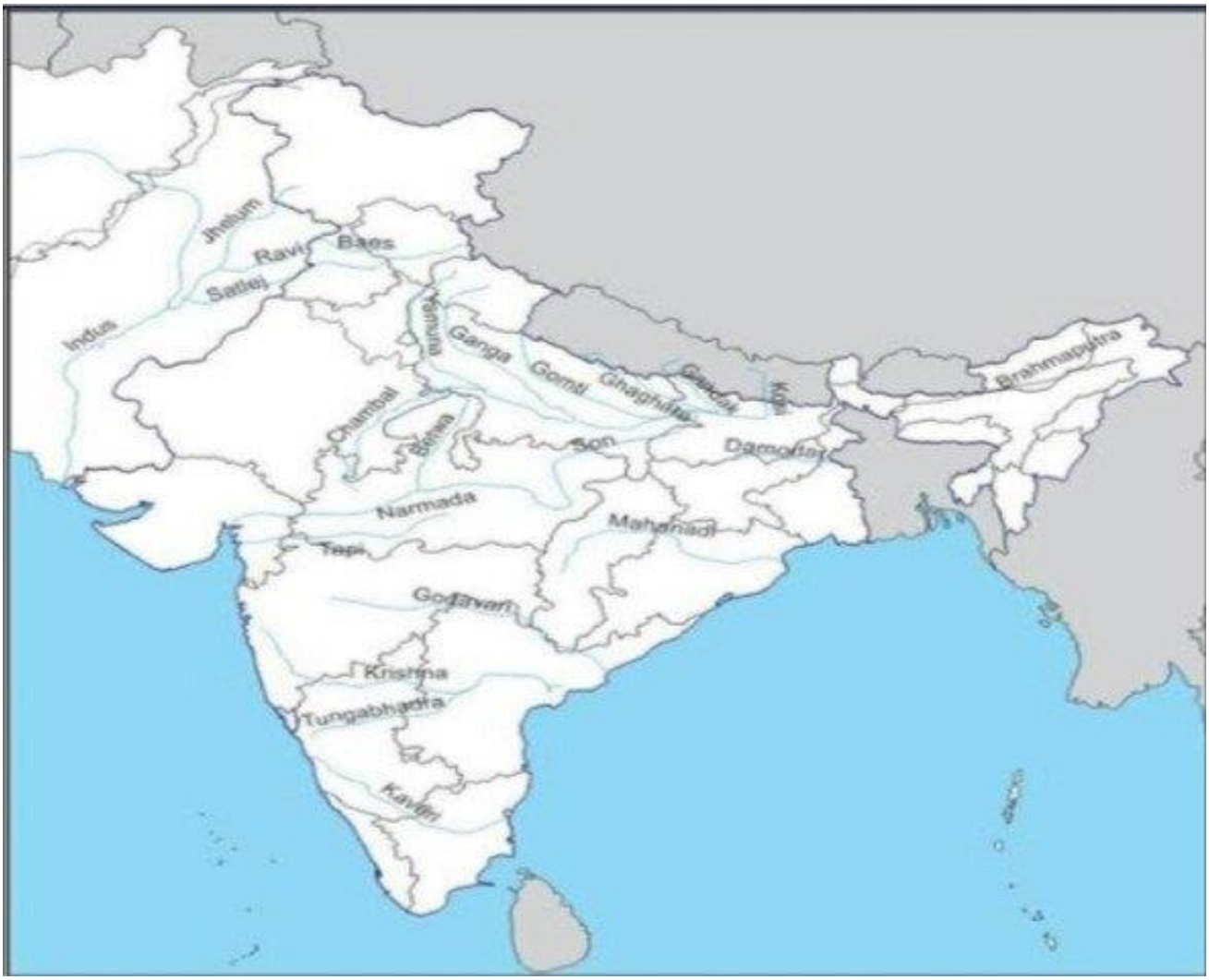
Jhelum
Ravi
Beas
Satluj
Indus
Yamuna
Ganga
Gomti
Ghaghara
Kosi
Brahmaputra
Chambal
Betwa
Son
Damodar
Narmada
Mahanadi
Tapi
Godavari
Krishna
Tungabhadra
Kaveri

भारतीय शहर

Peshawar
KASHMIR
AFGHANISTAN
PUNJAB
Sutlej R.
Panipat
DELHI
SIND
RAJPUTANA
Lucknow
AWADH
Benares
Allahabad
Patna
REWA
BIHAR
SCINDIA
HOLKAR
Dacca
BENGAL
GUJARAT
Calcutta
Chittagong
Narmada R.
Surat
BERAR
ORISSA
Aurangabad
Bombay
Poona
NIZAM
ARABIAN
SEA
BAY OF
BENGAL
Hyderabad
Krishna R.
Masulipatam
GOA
Fort St. David